Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 1

– Save This Page as a PDF–

मंदिर में बालक यीशु

लूका २: ४१-५०

खोदना : इन पर्वों का क्या महत्व था जो प्रभु के माता-पिता के साथ एक वार्षिक परंपरा थी? इस मार्ग में प्रकट हुए यीशु के चरित्र लक्षणों की एक सूची बनाएं। वे हमें इस बारे में क्या बताते हैं कि यीशु किस प्रकार का युवा था? ऐसा लगता है कि वह अपने के लक्ष्य के बारे में कितना जानता है? उसके माता-पिता कितना जानते हैं? प्रतीत होता है कि उसके माता-पिता कितना भूल गए?

प्रतिबिंबित: अपनी दैनिक जिम्मेदारियों के साथ परमेश्वर के लिए अपनी भूख को संतुलित करने में क्या आप परमेश्वर या अन्य चिंताओं की उपेक्षा करने के पक्ष में अधिक गलती करते हैं? क्यों? आपके लिए एक उचित संतुलन कैसा दिखेगा? अभी उसके लिए आपके कुछ प्रश्न क्या हैं? जब आपको तत्काल उत्तर नहीं मिलता है, तो क्या सोचते हैं? क्या आपके पास आश्वासन है कि वह सुन रहा है? क्या आप इस संभावना को स्वीकार करते हैं कि वह ना कह सकता है?

हर साल यीशु के माता-पिता यरूशलेम जाते थे। निसान के चौदहवें दिन, हर सक्षम शरीर वाले इस्राएली व्यक्ति को अशुद्धता की स्थिति में नहीं रखा गया था, और पवित्र शहर से पंद्रह मील से अधिक दूर नहीं था, पेसाच के लिए येरुशलीम में उपस्थित होना था। यद्यपि महिलाओं को ऊपर जाने के लिए बाध्य नहीं किया गया था, हम पवित्र शास्त्र (प्रथम शमूएल १:३-७), और यहूदी अधिकारियों द्वारा निर्धारित नियमों से जानते हैं (देखें जोसेफस, युद्ध, vi. ९-३; और मिशना पेस। Ix। ४), कि उनकी उपस्थिति सामान्य थी। वाकई, यह पूरे इसराएल के लिए खुशी का समय था। देश के सभी भागों से और विदेशों से उत्सव के तीर्थयात्री समूहों में आते थे, अपने तीर्थयात्रियों का भजन गाते थे, और अपने साथ होमबलि और शांति प्रसाद लाते थे, जिस तरह से ADONAI ने उन्हें आशीर्वाद दिया था; क्योंकि उसके साम्हने कोई रिक्त न दिखाई पड़े। जोसीफस ने रिकॉर्ड किया है कि शहर में लोगों की संख्या सामान्य ५००,००० से बढ़कर लगभग तीन मिलियन हो जाएगी।

सीधे तौर पर नाम लिए बिना, यह आखिरी बार है जब यूसुफ, यहोवा का पार्थिव सौतेला पिता, तसवीर में है। अपूर्ण क्रिया का जाना इंगित करता है कि यीशु के माता-पिता की आदत थी कि वे पेसाच मनाने के लिए डेविड शहर गए। हर साल भी इसी बात पर जोर देता है। यरूशलेम नासरत से भी ऊँचा स्थान है; इसलिए, उन्हें वहाँ जाने के लिए ऊपर जाना पड़ा। फसह तीन वार्षिक पर्वों में से एक था, फसह, सप्ताह और बूथ, यहूदी पुरुषों को

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 2

मनाने की आवश्यकता थी (व्यवस्थाविवरण १६:१६)।

येशु के माता-पिता निर्गमन २३:१४-१७और व्यवस्थाविवरण १६:१-८ में पाई गई आज्ञाओं के अनुसार हर साल फसह के पर्व के लिए सिय्योन जाते थे। इसने टोरा के प्रति उनकी आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया। लेकिन सड़क पर चोरों और हत्यारों के कारण अकेले या परिवार के रूप में यात्रा करना खतरनाक था। इसलिए लंबी दूरी की यात्रा करते समय, लोग आमतौर पर कंपनी और सुरक्षा के लिए कारवां में यात्रा करते थे। एक दिन का सफर करीब पच्चीस मील का होता था। ल्यूक, रुच हाकोडेश की प्रेरणा के तहत, रिकॉर्ड करने के लिए मजबूर महसूस करता है जब यीशु बारह वर्ष का था, उसके माता-पिता रिवाज के अनुसार दावत में गए थे (लूका २:४१-४२)।

जब यीशु छोटा था तब उसके माता-पिता उसके बिना यरूशलेम चले गए। परन्तु अब समय था कि वह उनके साथ जाए। रब्बियों ने सिखाया कि बेटे को तेरह वर्ष की उम्र में अपने बार मिट्ज्वा की तैयारी के रूप में यरूशलेम ले जाया जाना था (पिरके एवोट ५.२४)। उस यहूदी प्रथा को ध्यान में रखते हुए, उसके माता-पिता उसे दाऊद के शहर में ले गए जब वह बारह वर्ष का था। तेरह साल की उम्र में, एक यहूदी लड़के को बार मिट्ज्वा, या आज्ञा का पुत्र कहा जाता था (निद। ५:६; नज़ीर २९बी), जवाबदेही की उम्र, जब वह वयस्कता की जिम्मेदारियों को निभाएगा। इसलिए, यीशु इस मार्ग से मर्दानगी के लिए निर्देश और तैयारी के एक कठोर कार्यक्रम से गुजरे होंगे। लेकिन आधुनिक बार मिट्ज्वा समारोह और उत्सव मध्य युग में यहूदी रीति-रिवाजों से विकसित हुए, इसलिए हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि यहूदियों ने पहली शताब्दी में कैसे मनाया। हालांकि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि लूका का वृत्तांत इस घटना को दर्ज करता है क्योंकि इसने एक पारंपरिक यहूदी के रूप में येशुआ के जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के रूप में कार्य किया।

पेसाच एक दिन तक चला, और इसके तुरंत बाद कुल आठ उच्च पवित्र दिनों के लिए अखमीरी रोटी का पर्व मनाया गया (निर्गमन २३:१५; लैव्यव्यवस्था २३:४-८; व्यवस्थाविवरण १६:१-८)। साथ में, उन्हें आमतौर पर फसह कहा जाता था। आठ दिवसीय उत्सव के केवल पहले दो दिनों में टेंपल माउंट में व्यक्तिगत उपस्थिति अनिवार्य थी। तीसरे दिन तथाकथित अर्ध-छुट्टियाँ शुरू हुईं, जब तीर्थयात्रियों को घर लौटने की अनुमति दी गई। और नासरत के कारवां सहित बहुतों ने ऐसा किया। तीर्थयात्रियों को और अधिक रोकने के लिए वास्तव में कोई विशेष रुचि नहीं थी। फसह का भोजन पहले ही खाया जा चुका था, दूसरी चगीगाह भेंट की बलि दी गई थी (पहली बार राष्ट्र के पापों के लिए एक प्रतिनिधि के रूप में बलिदान किया गया था, निसान के पंद्रहवें दिन सुबह ९:०० बजे मंदिर के मैदान में वध किया गया था), और पहला पके जौ को काटा गया था, मंदिर में लाया गया था और सब्त के बाद हाशेम के सामने पहले फूल के ओमर के रूप में लहराया गया था।

इसलिए मरियम और जोसेफ ने सैकड़ों अन्य तीर्थयात्रियों के साथ उत्तर की ओर गलील

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 3

की यात्रा शुरू की, जिसमें शायद दर्जनों दोस्त और रिश्तेदार भी शामिल थे। और जब पूरा कारवां लौट रहा था, जब वे दो आवश्यक दिन पूरे कर चुके थे, लड़का यीशु पीछे शहर में रह गया। परन्तु उसके माता-पिता इससे अनजान थे (लूका २:४३)। कारवां शायद सामरिया के चारों ओर एक ऐसे रास्ते पर चला गया था जिसे केवल विश्वासघाती के रूप में वर्णित किया जा सकता था। भोजन और पानी के कुछ सराय या स्रोत थे, और परिदृश्य रेगिस्तान और बीहड़ जंगल के बीच वैकल्पिक था। लेकिन संख्या में सुरक्षा थी इसलिए मरियम और जोसेफ के साथी यात्री शायद ही अजनबी थे, क्योंकि उन्होंने हर साल एक ही यात्रा एक साथ की थी।194

मैरी और योसेफ को चिंता तब हुई जब उन्होंने महसूस किया कि वे अपने बेटे का ट्रैक खो चुके हैं। जब कोई बच्चा डिपार्टमेंटल स्टोर से गायब हो जाता है या स्कूल से समय पर घर नहीं पहुंच पाता है, तो उन्होंने पहली बार उस घबराहट का अनुभव किया जो माता-पिता पर हावी हो जाती है। यह मिलावट कैसे हुई? महिलाएं आमतौर पर छोटे बच्चों के साथ इस तरह की यात्रा पर जाती हैं, जो पुरुषों और बड़े लड़कों से अलग होती हैं। लेकिन येशु बारह वर्ष का था, और धीरे-धीरे अपनी माँ की देखभाल से अपने पिता के प्रशिक्षण की ओर बढ़ रहा था। उस संक्रमण के दौरान, एक लड़का माता-पिता के साथ यात्रा करने का विकल्प चुन सकता था। स्पष्ट रूप से उसके प्रत्येक माता-पिता ने सोचा था कि यीशु दूसरे के साथ गया था। यह एक ईमानदार गलती थी।

यह सोचकर कि वह उनकी संगति में है, उन्होंने एक दिन के लिए यात्रा की थी। इस दिन के कारवां प्रतिदिन लगभग बीस मील की यात्रा करते थे। तब वे उसे अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बीच ढूँढ़ने लगे (लूका २:४४)। अपूर्ण काल पूर्णता और बार-बार की जाने वाली क्रिया को दर्शाता है। वे बार-बार अपने खोए हुए बेटे की तलाश में कारवां की लंबाई तक चले, इस समय और अधिक चिंतित हो गए, साथी तीर्थयात्रियों से अपने बेटे के ठिकाने के बारे में कुछ सुराग मांगा। लेकिन एक भी व्यक्ति को यीशु को देखने की याद नहीं आ रही थी जब से यात्रियों का अंतहीन स्तम्भ दाऊद के शहर से निकला था। जब उन्होंने उसे नहीं पाया, तो वे जल्दी से अपने कदम पीछे ले गए और येरूशलीम को खोजने के लिए वापस चले गए (लूका २:४५)) पूरा दूसरा दिन यरूशलेम लौटने में व्यतीत हुआ।

भीड़-भाड़ वाले व्यस्त शहर में कहीं न कहीं व्यापारियों, सैनिकों और विदेशी यात्रियों के बीच उन्हें अपने बेटे की तलाश करनी पड़ी। जैसे ही तीसरा दिन शुरू हुआ और तथाकथित आधी छुट्टियां शुरू हो गईं, पवित्र शहर में चीजें सामान्य होने लगीं। सैनिक पास के एंटोनिया किले में अपने बैरकों में लौट आए थे, जिससे उपासकों को प्रार्थना, उपवास, पूजा, बलिदान और शिक्षण की अपनी सामान्य दिनचर्या में लौटने की अनुमति मिली। यीशु उसके तत्व में था।

येशुआ शायद इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थे कि उनके माता-पिता ने नासरत की यात्रा पहले ही शुरू कर दी थी। वह असंवेदनशील नहीं था, लेकिन अपनी अंतर्दृष्टि साझा

[illegible]

[illegible]

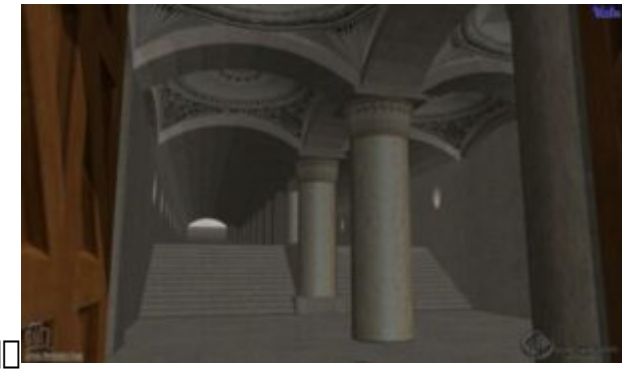
[illegible]



[illegible]

(Figure **Mx** – [illegible])

[illegible]



(Figure [illegible]

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 5



यह एक तीन एकड़ का मंच था जिसकी दीवारें एक
चौथाई मील तक फैली हुई थीं और इसमें रोमन कोलिज़ीयम के आकार के दो एम्फीथिएटर हो सकते थे। पाँच सौ हाथ वर्ग होने के कारण, इसमें कुल लगभग २००,००० लोग बैठ सकते थे। उन्होंने खुद को एक बहुत बड़े भीड़-भाड़ वाले प्लाज़ा पर खड़ा पाया, जहाँ वे अपने बेटे के संकेतों के लिए कई उपासकों को स्कैन करना शुरू करते हैं। यह जानना असंभव लग रहा था कि पहले कहाँ देखना है। उन्हें आगे क्या करना चाहिए? उन्हें कहाँ जाना चाहिए?



अभयारण्य की ओर बढ़ते हुए, वे सुंदर द्वार से
गुजरे और महिलाओं के दरबार में प्रवेश किया। मंदिर परिसर का यह भीतरी क्षेत्र पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए खुला था। निश्चित रूप से, यह सभी के लिए पूजा का सामान्य स्थान था और कुछ हद तक खुली हवा में मंदिर के आराधनालय के रूप में कार्य करता था। यह एक बड़ा क्षेत्र था जो ७० ७०.८७ गुणा ७०.८७ मीटर, ५,०२३ वर्ग मीटर, या १६,४७५ वर्ग फीट में फैला था। इसके चारों ओर ६० फीट वर्ग का एक साधारण बरामदा था। कुछ ही दिन पहले फसह की ऊंचाई पर यह ६००० उपासकों को धारण करने में सक्षम था। लेकिन अब तथाकथित आधी छुट्टियों के कारण कई तीर्थयात्री घर लौट चुके थे। हालाँकि, यह अभी भी काफी भीड़भाड़ वाला था, कि उन्हें इस निष्कर्ष पर पहुँचने में जितना समय लगा था, उससे अधिक समय लगा कि यीशु कहीं नहीं था।

तलाशी मिटाने की एक प्रक्रिया बन गई थी। उनका बेटा स्पष्ट रूप से चैंबर ऑफ द लेपर्स में नहीं था। चूल्हा के चैंबर में पुजारी रहते थे, जब वे ड्यूटी पर थे और

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 6

इसमें केवल शयनगृह और कार्यालय थे, इसलिए यह संभावना नहीं थी। चैंबर ऑफ द नाज़ीराइट्स, वह भी, सवाल से बाहर था। लेकिन मरियम और जोसेफ हताश थे और कहीं भी देखने को तैयार थे। उन्होंने मंदिर के मैदानों को उसी उन्मत्त तात्कालिकता के साथ खंगाला जिसके साथ उन्होंने पहले दिन में यरूशलेम के बाजारों और गलियों की तलाशी ली।



अंत में, अंतिम उपाय के रूप में, वे रॉयल
स्टोआ गए (देखें Me – राजकियो डांड)। यह एक विशाल खुली हवा वाला प्लाज़ा था जो पूरी दक्षिणी दीवार की लंबाई तक फैला हुआ था। यह एक बेसिलिका, या प्राचीन रोम में एक बड़ी संरचना की योजना के अनुसार बनाया गया था। डिजाइन में आयताकार, इसमें प्रत्येक छोर पर पोर्टिको से प्रवेश किया गया एक छत वाला हॉल शामिल था। इसमें एक विस्तृत केंद्रीय गलियारा, या नाभि था, और स्तंभों की पंक्तियों द्वारा दोनों ओर के गलियारों से अलग किया गया था। नेव की दीवारें गलियारे की छतों से ऊपर उठीं और प्रकाश को स्वीकार करने के लिए खिड़कियों के साथ बनाई गई थीं (देखें एमजेड – रॉयल स्टोआ का इंटीरियर)। यह एक पवित्र स्थान नहीं था और वास्तव में अन्यजातियों के दरबार का विस्तार था। इसके लिए रब्बी के विवरण को तल्मूड में चानुथ या चानुयोथ कहा जाता था, जिसका अर्थ दुकान या बाजार जैसा कुछ होता है। अपने जीवन के अंतिम सप्ताह में, येशुआ पैसे बदलने वालों को उसी स्थान से बाहर निकाल देगा (देखें Iv – यीशु ने मंदिर क्षेत्र में प्रवेश किया और उन सभी को बाहर निकाल दिया जो खरीद और बिक्री कर रहे थे)।

30 ईस्वी से, महान महासभा (देखें Lg – महान महासभा) रॉयल स्टोआ के दक्षिण-पूर्वी कोने में मिले। इससे पहले इसके इतिहास में, वे मंदिर के दक्षिणी हिस्से में पॉलिश स्टोन्स के हॉल में मिले थे। लेकिन तल्मूड रिपोर्ट करता है कि यहूदी ७०ईस्वी में मंदिर के विनाश से ४० साल पहले सर्वोच्च न्यायालय रॉयल स्टोआ में चला गया। आम तौर पर, यहूदी सर्वोच्च न्यायालय के सदस्य, जो सुबह के बलिदान के अंत से शाम के बलिदान से पहले अपील की अदालत के रूप में बैठे थे, दिन भर कब्जे में रहे। लेकिन ऐसे अवसर थे, जैसे सब्त और दावत के दिन, जब वे शाही स्टोआ के उपनिवेश में पढ़ाने के लिए निकलते थे। वे बरामदे धार्मिक या अन्य चर्चा के लिए सबसे सुविधाजनक स्थान थे। ऐसी स्थिति में उनसे प्रश्न पूछने के लिए अधिक अक्षांश दिया जाएगा। शिक्षार्थी रब्बियों के चरणों में जमीन पर बैठ गए, जो स्वयं अपनी

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 7

सामान्य शिक्षण स्थिति में बैठे थे।

एक छोटे लड़के के रूप में भी, यीशु को अपने मिशन के बारे में स्पष्टता थी। वह इस धरती पर अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए आया था। वह रब्बियों के बीच बैठा था, उनकी सुन रहा था, उन्हें समझ रहा था और उनसे प्रश्न पूछ रहा था (लूका २:४६)। अखमीरी रोटी का पर्व अभी भी मनाया जा रहा था, क्योंकि येशु पर्व की समाप्ति के बाद रब्बियों के बीच नहीं बैठा हो सकता था। फिर भी, बारह वर्ष की आयु में वह उन लोगों के साथ तानाख में मुद्दों और मोशे के टोरा के बारीक बिंदुओं पर बुद्धिमानी से चर्चा करने में सक्षम था, जहां इसकी व्याख्या में विशेषज्ञ थे। जाहिर तौर पर वह उनसे ऐसे सवाल पूछ रहा था जिनका वे जवाब नहीं दे सकते थे। यह असाधारण था कि उनके प्रश्न ऐसी अंतर्दृष्टि दिखा सकते थे जो विद्वान रब्बियों का विशेष ध्यान आकर्षित कर सके।

हर कोई जिसने उसे सुना वह उसकी समझ और उसके गहन उत्तरों से चकित हुआ (लूका २:४७)। रब्बियों की प्रतिक्रिया का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ग्रीक शब्द एक्ज़िस्टेंटो दो कारणों से आकर्षक है। सबसे पहले, चकित का शाब्दिक अर्थ है स्वयं को हटाना; लाक्षणिक रूप से इसका अर्थ है किसी की बुद्धि खोना, किसी के दिमाग से बाहर जाना, या किसी की बुद्धि से भयभीत होना। आज हम कहेंगे: वे अपने ही पास थे। इसलिए, आश्चर्य वास्तव में उस पूर्ण विस्मय और उत्साह को नहीं पकड़ता है जिसने इज़राइल के सबसे प्रतिभाशाली रब्बियों को जब्त कर लिया था। वह एक विलक्षण बालक था। ग्रीक शब्द इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि यीशु अवधारणाओं को एक साथ रख सकते थे और अंतर्दृष्टि के साथ आ सकते थे जो कि बारह साल की उम्र की समझ से बहुत दूर होनी चाहिए थी। वह इस मुद्दे की तह तक जा सकते थे जैसे उन्होंने किसी को नहीं देखा था। बारह वर्ष की आयु तक, यीशु को पता चल गया था कि वह इस्राएल का मसीहा है।

अचंभित शब्द के उपयोग का दूसरा कारण असाधारण है, यह है कि तानाख या सेप्टुआजेंट का ग्रीक अनुवाद, उसी शब्द का उपयोग उन लोगों की प्रतिक्रिया का वर्णन करने के लिए करता है जिन्होंने ADONAI को देखा था। लूका जितने भी शब्दों को चुन सकता था, उनमें से उसने सबसे अधिक धार्मिक रूप से भरे हुए शब्द का इस्तेमाल किया। निस्संदेह, उनके पाठकों ने इस बिंदु को याद नहीं किया।

उनके विस्मय के कई कारण थे। पहला उसकी उम्र थी, दूसरा उसका ज्ञान था, लेकिन तीसरा, यीशु गलील से था और यरूशलेम में यहूदी रब्बीनिक स्कूलों में से एक से नहीं था। आखिरी, और इससे भी बदतर, वह नासरत शहर से था, जहां स्कूली शिक्षा अन्य गैलीलियन स्कूलों की तुलना में कम मूल्य की थी। लेकिन, वास्तव में, येशुआ के पास सबसे अच्छा प्रशिक्षण था (यशायाह Ir पर मेरी टिप्पणी देखें – क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी मदद करता है, मैं अपना चेहरा एक चकमक पत्थर की तरह स्थापित करूंगा)। वह परमेश्वर पिता द्वारा प्रशिक्षित और चेला था; और इसलिए, टोरा के विशेषज्ञों के

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 8

साथ एक बुद्धिमान बातचीत करने में सक्षम। नत जतन, सबने उसे सुना जो चकित थे।



शाही स्टोआ में बैठे जहां महासभा के कुछ सदस्यों
ने फसह के दौरान तीर्थ यात्रियों को पढ़ाया, मेरी ने उनकी आवाज सुनी। तीन दिनों की उन्मत्त खोज के बाद, उन्होंने उसे सुरक्षित और स्वस्थ पाया; शांति से डब्बियों को सुनना और उनसे प्रश्न पूछना, ऐसा प्रतीत होता है, अपने माता-पिता के संकट के बारे में बेफिक्र। जब उन्होंने उसे देखा, तो वे चकित हुए क्योंकि उसके मुंह से आने वाले शब्द कुछ भी नहीं थे जैसा उन्होंने पहले कभी सुना था (लूका २:४८क)। मेरी और योसेफ उस सहजता से हैरान थे जिसके साथ उनके बेटे ने अदोनाइ की बातों पर चर्चा की।

फिर भी, वे काफी चिड़चिड़े थे क्योंकि उन्होंने उसे तीन दिनों में नहीं देखा था। वे शायद चिंतित थे कि वह कहीं सड़क के किनारे मरा हुआ है। इसलिए स्वाभाविक रूप से, उन्होंने यीशु से ऐसे बात की जैसे कोई माता-पिता एक खोए हुए बच्चे को खोजने पर होता (मुझे बहुत राहत मिली कि मैंने तुम्हें पाया, अब मैं तुम्हारा गला घोंटने जा रहा हूँ)। याद रखें, मेरी और योसेफ एक सामान्य स्वस्थ लड़के की परवरिश कर रहे थे। वह प्रभा मंडल पहनकर इधर-उधर नहीं भागा। जब उसकी थकी हुई लेकिन राहत भरी माँ को आखिरकार उससे बात करनी पड़ी, तो उसने उसे डांटना शुरू कर दिया। उसने कहा: बेटा, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों व्यवहार किया? आपके पिता (अपने सौतेले पिता जोसेफ के साथ येशुआ के संबंध का वर्णन करने का सबसे स्वाभाविक तरीका) और मैं उत्सुकता से आपको ढूंढ रहे हैं (लूका २:४८ख)।

जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो यीशु का उत्तर शायद वह आखिरी बात थी जो उसने सुनने की उम्मीद की थी: तुम मुझे क्यों खोज रहे थे? क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में रहना है? मैं और मैं शब्द प्रभावशाली हैं। पहली नज़र में, उनका उत्तर थोड़ा अपमानजनक लग सकता है, लेकिन हम प्रिंट में उनकी आवाज़ के परिवर्तन को नहीं सुन सकते। मंदिर में उसे खोजने से पहले पूरे दिन उनकी उन्मत्त खोज ने वास्तव में उसे भ्रमित कर दिया। यदि उसके माता-पिता ने शिमोन और अन्ना के शब्दों को याद किया होता, तो मंदिर को वह पहला स्थान होना चाहिए था, जहां उन्हें सिय्योन लौटने पर ध्यान देना चाहिए था। परमेश्वर का पुत्र अपने पिता के घर के

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 9

सिवा और कहाँ होगा? लेकिन बेवजह, यीशु के पालन-पोषण के बारह वर्षों के दौरान, स्वर्ग दूतों, चरवाहों, शिमोन, अन्ना और जादूगरों के शब्द फीके पड़ गए थे। ऐसा लगता था कि दैनिक जीवन की नीरसता ने उन्हें धो डाला था। मेरी और योसेफ ने बिंदुओं को नहीं जोड़ा, और समझ में नहीं आया कि वह उनसे क्या कह रहा था (लूका २ :४१ – ५०)।

यहूदी परिवार के संदर्भ में, यीशु वहीं था जहाँ वह था – सीखने और पारिवारिक व्यवसाय में सक्रिय होने के लिए अपनी माँ से अपने पिता के लिए उपयुक्त बदलाव करना। बारह साल की छोटी उम्र में, मसीहा ने अपने माता-पिता के साथ अपने रिश्ते में एक महत्वपूर्ण मोड़ का संकेत दिया। वह उनके साथ नासरत लौट आया और अपनी आज्ञाकारिता के साथ उनका सम्मान करना जारी रखा (देखें Bb – और यीशु बुद्धि और कद में, और परमेश्वर और अन्य लोगों के पक्ष में)। यूसुफ ने उसे बढ़ई का व्यापार सिखाया। लेकिन जिस पारिवारिक व्यवसाय को यीशु को उठाना था, वह स्वर्ग में उसके पिता का था।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफ़ेद ऋषि के कलम नाम से लिखा। और अगले पन्द्रह वर्षों तक उसने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुरा के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। 1920 के दशक की शुरुआत में, Safed के बारे में कहा जाता था कि उसके कम से कम तीन मिलियन अनुयायी थे। एक साधारण घटना को आध्यात्मिक सत्य के दृष्टांत में बदलना हमेशा बार्टन की सेव काई का मुख्य बिंदु था।

वहाँ हमारे घर आया, हमारा छोटा पोता। और उसने अपनी दादी केतुरा से मांग की, कि वह उसे एक रोल दे। और वह उसे साफ-साफ समझ लेती, लेकिन उसने कहा कि उसे एक पायन्डर रलो चाहिए।

अब केतुरा पॉकेट-बुक रोल, और पार्कर हाउस रोल, और हॉट बिल्कुल बना सकती है, और अगर किसी भी तरह के रोल अच्छे हैं, तो वह उन्हें भी बना सकती है। और जब वह उन्हें गोल्डन बटर और मेपल सिरप या हनी या प्रिजर्व के साथ परोसती है, तो वे ग्रेवेन इमेज के मुंह में पानी ला देते हैं। लेकिन वह किसी पायन्डर रोल के बारे में नहीं जानती थी।

और छोटे लड़के ने कहा, मुझे वह रोल चाहिए जिसे पायनडर कहा जाता है। तब कतूरा के मन में एक महान श्वेत प्रकाश का उदय हुआ, और उसने कहा, मेरे प्रिय, मुझे बाकी सब बताओ। और उन्होंनें कहा: जब यहोवा की तुरही बजेगी और समय नहीं रहेगा। और रोल को पायनडर कहा जाता है (भजन से: जब रोल को यॉन्डर कहा जाता है) मैं वहाँ रहूंगी। और उसने उसे एक रोल दिया, और वह वहाँ था।

अब मैंने अपने आप को उन अजीब मानसिक चित्रों के बारे में सोचा जो हमारे बड़े हो

Ba – मंदिर में बालक यीशु लूका २: ४१-५० | 10

चुके शब्द बच्चों के दिमाग में लाते हैं। और मैंने माना कि हमारे स्वर्गीय पिता जानते हैं कि हमारे दिमाग भी छोटे बच्चों के दिमाग हैं, और आकाशीय चीजों के हमारे सभी मानसिक चित्र सीमित हैं, जैसा कि मैरी और योसेफ ने इतनी अच्छी तरह से प्रदर्शित किया है, और जितना हम ईश्वरीय सत्य के बारे में सीखते हैं पायनडर रोल के रूप में।

और मैं आभारी हूं कि हमारे पास हमारे पायनडर रोल हैं, यहां तक कि हमारी दैनिक रोटी भी है, और यह कि आवश्यक धार्मिकता का मार्ग इतना सरल है कि एक छोटा बच्चा इसे सीख सकता है। और यह मेरी पूरी आशा है कि जब रोल को यॉन्डर कहा जाएगा, तो मैं वहां रहूंगा।